ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा स्रेधत।। ऋ. 7/32/9
हिंसा - मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति वैर मत करो।
Never injure anyone in thought, word and deed.

वर्ष 38, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 जून, 2015 से रविवार 28 जून, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द : 192 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के अवसर पर विश्वभर में अनेक आयोजन

भारत सहित विश्व के 192 देशों में मनाया गया योग दिवस

दिल्ली में बच्चों, महिलाओं व आर्यजनों ने उत्साह के साथ मनाया प्रथम योग दिवस

नई दिल्ली के राजपथ से नगर-नगर तक पहुंचा योग : नित्य प्रति योग करने के दिलवाए संकल्प

आर्यसमाज ने साध्वी उत्तमायति जी के सान्निध्य में मनाया योग दिवस समारोह

21 जून 2015, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजों ने सामूहिक रूप से एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, दिल्ली के प्रांगण में योग दिवस का विशाल आयोजन किया जिसमें सैंकड़ो की तादात में बच्चों, महिलाओं व आर्य जनों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया व समूहिक रूप से ध्यान एवं योगासनों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी उत्तमायति के सानिन्ध्य में हुआ व दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने योग को अपने जीवन में आजीवन अपनाने का संकल्प लिया।

सभा करेगी दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज में योग कक्षा की व्यवस्था करने सम्बन्धी इकाई का गठन - धर्मपाल आर्य

कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सभा दिल्ली की प्रत्येक आर्यसमाज में योग कक्षा की व्यवस्था करने सम्बन्धी इकाई का गठन करने करेगी। महामंत्री श्री विनय आर्य ने योग के लाभों से अवगत कराते हुए कहा कि योग हमारे समाज में प्राचीन काल से सक्रिय है। आचार्य पतंजलि ने सर्वप्रथम योग के महत्त्व को समझा था और उन्हींने योग विद्या को विकसित किया। हजारों साल पुरानी इस साधना को हम विकास की दौड़ में भूलते जा रहे थे जिसे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में एक प्रस्ताव के रूप में रखा जिसे तत्काल 175 देशों ने सहर्ष स्वीकार करते हुए 21 जून 2015 को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की सम्मति प्रदान कर दी। यह हमारे देश के लिए, हमारे समाज के लिए विशेष कर आर्य जनों के लिए गौरव की बात है। हम आज जिस कार्यक्रम की पुन: राष्ट्र भावना के साथ शुरुआत कर रहे हैं उसकी धारा अविरल निरंतर बहती रहेगी।

योग दिवस के इस कार्यक्रम में बच्चों व महिलाओं का विशेष उत्साह देखने को

- शेष पृष्ठ 8 पर

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यति जी के निर्देशन में योग करती आर्य वीरांगनाएं।

दिल्ली में आयोजित योग दिवस समारोह के अवसर पर नित्यप्रति योग करने का संकल्प लेते दिल्ली आर्यसमाज के अधिकारी एवं आर्य वीरांगनाएं।

वेद-स्वाध्याय

सत्य-प्रिय वाणी को प्रेरित और बुद्धि को जगाने वाली सरस्वती

चोदयित्री सूनृताना चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती।। -ऋ. 1/3/11
ऋषिः- मधुच्छन्दाः।। देवता - सरस्वती।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ - **सूनृतानाम्** - सच्ची और प्यारी वाणी को **चोदयित्री** - प्रेरित करती हुई **सुमतीनाम्** - और अच्छी बुद्धियों को चेतन्ती - चेताती हुई सरस्वती - सरस्वती **यज्ञम्** - यज्ञ को **दधे** - धारण किये हुए है।

विनय - जिन्होंने अपने जीवन को यज्ञ बनाया है वे जानते हैं कि इस जीवन-यज्ञ को जहां अन्य (परमेश्वर के शक्ति रूप) देवों ने धारण कर रखा है, वहां सरस्वती देवी ने भी इसे धारण किया हुआ है। यह देवी दो कार्य कर रही है। यह एक तो 'सूनृता' वाणी को प्रेरित करती है और दूसरी, सुमतियों को जगाती रहती है। सूनृता उस वाणी का नाम है जो सच्ची और प्यारी होती है। केवल प्रिय वाणी तो किसी काम की है ही नहीं, किन्तु केवल सच्ची वाणी बोलना भी अधूरा है। सत्य के साथ वाणी में अहिंसा भी रहे तभी वाणी पूरी होती है और तब वाणी में प्रेम भी आ जाता है। सरस्वती देवी हम लोगों में ऐसी सत्यमयी और मधुर वाणी को प्रेरित करती रहती है।

इस कारण हमारा जीवन-यज्ञ अभग्न चलता है। इसके अतिरिक्त यह सरस्वती देवी इस यज्ञ के एक अन्य ऐसे गहरे और सूक्ष्म अंग को भी निभाती है, जब यह हममें श्रेष्ठ, सुन्दर, कल्याणकर बुद्धि (ज्ञान) को निरन्तर जगाती है। जब जीवन-यज्ञ ठीक चल रहा होता है तो अन्दर सरस्वती देवी हममें शुभ, सबकी कल्याणकारिणी, हितकारी बुद्धियों को ही उत्पन्न करती हुई और हमारी वाणी से सच्चे और प्रेममय वचनों का ही प्रवाह बहाती हुई होती है, अत: जब कभी हमारे मन में कोई दुर्मति उत्पन्न हो, हमारा मन किसी के लिए अहित व अनिष्ट सोचे तो समझ लो कि सरस्वती देवी ने हमें छोड़ दिया है। जब कभी हम अनृत या कठोर (हिंसक) वचन बोलें तो समझ लो कि सरस्वती देवी हमारे जीवन की यज्ञशाला से उठ गयी है। हमें फिर सुमति और सुनृता वाणी का संकल्प करके अपने हृदयासन में सरस्वती देवी को बिठलाना चाहिए और इस यज्ञ-भंग के लिए प्रायश्चित करना चाहिए। हम प्राय: समझते हैं कि सरस्वती देवी का प्रसाद पढ़ना-लिखना आ जाना है, परन्तु ऐसा नहीं है। यदि किसी के हृदय में निरन्तर सुमति की धारा बहती हो और उसकी वाणी से सत्यमय और मधुर वचनों का ही अमृत झरता हो तो वह मनुष्य चाहे बिल्कुल निरक्षर हो, तो भी उसमें निश्चय से सरस्वती का वास है, जो उसके जीवन-यज्ञ को धारे हुए चला रही है।

- आचार्य अभयदेव

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु सम्पर्क करें -

विजय आर्य, मो0 - 9540040339

विशेष सम्पादकीय

योग दिवस : एक संकल्प दिवस

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में योग की अनिवार्यता का प्रस्ताव रखकर व योग को समस्त राष्ट्रों में एक अनिवार्य विषय के रूप में स्थापित कर योग को पुन: स्थापित किया। जिसके लिये समस्त आर्यवृत उनका तहेदिल से आभारी है। योग दिवस एक दिन का कोई उपवास, उत्सव, त्यौहार नहीं है जिसे हम साल में एक दिन मनाकर फिर अगले वर्ष तक उसके पुन: आगमन की प्रतीक्षा करें। बल्कि योग दिवस एक शुभ दिन की शुरुआत है जो योग को जीवन में नित्य उतारने की प्रक्रिया का शुभ संदेश देता है कि आओ हम सब मिलकर संकल्प लें कि हम सब प्रतिदिन योग को अपने जीवन का अंग बनाएंगे। जैसे हम अपने बच्चों को कम्प्यूटर चलाना सिखाते हैं, कार, मोटरसाईकल चलाना, पढ़ना, खेलना, कूदना सिखाते हैं ठीक उसी तरह हम यदि उन्हें योग करना, स्वाध्याय करना सिखायें तो बच्चा स्वस्थ भी बनेगा और संस्कारी भी बनेगा क्योंकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली से बच्चे को वह शिक्षा मिलती है जिससे वह अपनी आजीविका चला सकता है वो पढ़ लिख भी जाता है किन्तु इस शिक्षा से उसकी समझ विकसित नहीं हो पाती पर रोजाना एक घंटा अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय और योग उसकी समझ भी विकसित करेगा। उसके तन, मन को स्वस्थ रखेगा और उसे वह संस्कार भी देगा जो उससे आप बुढ़ापे में चाह रहे हैं पर इसमें जहां कुछ लोग समय का अभाव दर्शाते हैं तो वहीं कुछ कहते हैं हम तो ठीक है हम क्यों योग करें! तो कुछ लोग योग को धर्म और राजनीति से प्रेरित समझते हैं। परन्तु मानवता का सच ये है कि जहां स्वस्थ शरीर, मन में शान्ति और सब जीवों के प्रति स्नेह की भावना रखे, वही वास्तव में धर्म है। कुछ लोग कहते है कि मन, इन्द्रियाँ और शरीर कर्मों को करते और सुख-दु:ख भोगते हैं। जीवात्मा न कर्म करता है और न सुख-दु:ख भोगता है। ऐसा मानना उचित नहीं है क्योंकि ये मन आदि सब जड़ पदार्थ हैं। ये न स्वयं कर्म कर सकते है और न सुख-दु:ख भोग सकते हैं इसलिये संस्कारों को उभारने वाला, मन-इन्द्रियों और शरीर से शुभ-अशुभ कार्य करने वाला तथा फल भोगने वाला जीवात्मा ही है।

पिछले दिनों एक चौंकाने वाला अध्ययन सामने आया, भारत में पिछले कुछ वर्षों में मानसिक रोगियों की संख्या में बढोत्तरी हुई है। लोग खुद को अकेला महसूस करते हैं, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं, पारिवारिक कलह और झगड़े बढ़ रहे हैं जिसका फायदा कुछ ढोंगी बाबा, पाखंडी ज्योतिषाचार्य के रूप में उठा रहे हैं जबकि इस सबका कारण हम लोगों की अपनी मूल परम्पराओं से भटकना बताया गया, किन्तु हमारे योग में इन सब समस्याओं का समाधान है जिसे हम यौगिक लाभ भी कह सकते हैं।

योग के मानसिक लाभ

1. *व्यक्ति पर्वत के समान कष्ट आने पर भी नहीं डरता, सबको सहन कर सकता है।*
2. *उसे ऐसा सामर्थ्य प्राप्त होता है जिससे कि वह सदा सत्य ही बोलता है।*
3. *अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग रहता है सदा घर-परिवार, समाज के संगठन की स्थापना चाहता है, विघटन को दूर करता है।*
4. *माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा करता है।*
5. *ऐसी पवित्रता प्राप्त होती है कि वह मांस मदिरा का सेवन नहीं करता। सदा सात्विक भोजन ही स्वीकार करता है।*
6. *उसे ऐसा ज्ञान प्राप्त होता है कि वह समस्त प्राणियों को आत्मवत देखता है उसकी सहन शीलता बढ़ जाती है।*
7. *वह मान अपमान से विचलित नहीं होता।*
8. *सदा निष्काम कर्म करता है।*
9. *अविद्या का नाश और विद्या की प्राप्ति होती है।*
10. *मन और इन्द्रियों को वश में करने की शक्ति प्राप्त होती है।*

तन, मन और आत्मा में ताल मेल बनाए रखने की हमारी प्राचीन विद्या योग का हमारी संस्कृति में एक विशेष स्थान है। योग से ही हमारे ऋषिमुनियों ने तन के सूक्ष्म अध्ययन के साथ-साथ मन और आत्मा का भी गहनता के साथ अध्ययन किया है। तो आओ मिलकर संकल्प करें कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सपनों को साकार करने के लिए योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएंगे।

- सम्पादक

बोध कथा

क्रोध : महा चाण्डाल

गंगा के किनारे एक साधु अपनी कुटिया बनाकर रहते थे। एक दिन उन्होंने अपने कपड़े धोए। धूप अच्छी थी, वहीं गंगा के किनारे रेत पर सूखने के लिए डाल दिये। तब स्वयं नहाए। नहा-धोकर अपनी कुटिया में जाकर बैठ गये। तभी एक चाण्डाल वहां आया। उसे भी गर्मी लग रही थी। उसने सोचा - 'गंगाजी के शीतल जल में स्नान कर लूं।' स्नान करने के पश्चात् बाहर निकला तो सोचा - 'कपड़े मैले हो गये हैं, इन्हें भी धो लूं।' बस वह कपड़े धोने लगा।

कपड़े धोने की आवाज कुटिया में पहुंची तो साधु ने सोचा कि कपड़े कौन धोता है? बाहर आकर देखा तो एक चाण्डाल कपड़े धो रहा है। यह भी देखा कि उसके कपड़ों से उड़ने वाले छींटे साधु के सूखते हुए कपड़ों पर गिर रहे हैं। बस, फिर क्या था। चढ़ गया क्रोध साधु महाराज को। दौड़ते हुए वह साधु चाण्डाल केपास पहुंचे और गालियां देते हुए बोले- 'तू अन्धा है? चाण्डाल होकर यहां कपड़े धोता है? तेरे अपवित्र छीटों ने मेरे कपड़ों को अपवित्र कर दिया है।' आगे बढ़कर तीन-चार चपत भी उन्होंने चाण्डाल के मुंह पर लगा दिये। चाण्डाल हाथ जोड़कर खड़ा रहा। साधु महाराज चिल्लाकर बोले - 'फिर मत आना इस स्थान पर।'

साधु महाराज थे बूढ़े और दुर्बल। चाण्डाल था हृष्ट-पुष्ट। साधु बाबा थक गये। हांपने लगे। गर्मी जो लगी तो गंगा में पहुंचकर नहाने लगे।

चाण्डाल को भी मार खाकर पसीना आ गया था। वह भी गंगा में कूद पड़ा। साधु बाबा ने चिल्लाकर कहा - 'अभी तो पसीने से तर हो रहा है। एकदम गंगा में कूद पड़ा। सर्द-गर्म हो गया तो मरेगा।'

चाण्डाल बोला- 'महाराज! आप भी तो नहा चुके थे आप क्यों नहाते हैं?'

साधु ने कहा - 'मुझे चाण्डाल ने छू लिया था, इसलिए नहाता हूं।'

चाण्डाल बोला - 'और मुझे महा-चाण्डाल ने, आपके क्रोध ने छू लिया था, इसलिए नहाता हूं।'

वस्तुत: यह क्रोध महा-चाण्डाल है। सब-कुछ बिगाड़ देता है। जहां उत्पन्न हो जाये, वहां सर्वनाश कर देता है। कुछ भी शेष नहीं रहने देता।

प्रसन्नचित्त, निर्मलचित्त वह है, जिसमें क्रोध नहीं है। मन को प्रसन्न और निर्मल बनाने का पहला साधन यह है कि क्रोध को अपने निकट मत आने दो। शान्त और गम्भीर बनकर रहो।

'वेदों का पुरुष-सूक्त और मन्त्रों में विहित रहस्यात्मक सत्य ज्ञान'

पाठकों के ज्ञानार्थ हम यजुर्वेद के 31वें अध्याय को, जो पुरुष-सूक्त के नाम से विख्यात है तथा सौभाग्य से इस पर वेदों के शीर्षस्थ व अपूर्व विद्वान महर्षि दयानन्द का भाष्य भी उपलब्ध है, परिचित कराने के लिए सभी मन्त्र व उनके भावार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे पाठक सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर, जीव, सृष्टि और राजा व समाज विषयक महत्त्वपूर्ण ज्ञान को जानकर लाभान्वित होंगे। - सम्पादक

- मनमोहन कुमार आर्य

ऋग्वेद के दसवें मण्डल का 90वां सूक्त पुरुष-सूक्त के नाम से विख्यात है। इस सूक्त की मन्त्र संख्या 16 है। यह सभी मन्त्र यजुर्वेद के 31 वें अध्याय में भी आये हैं। ऋग्वेद के 16 मन्त्रों के अलावा यजुर्वेद में 6 मन्त्र अधिक हैं। इन 6 मन्त्रों को उत्तर-नारायण-अनुवाक की संज्ञा दी गई है। अथर्ववेद के 19/6 सूक्त के भी 16 मन्त्र ऋग्वेदीय पुरुष-सूक्त के कुछ पाठान्तर और मन्त्रों के क्रमभेद के साथ उपलब्ध होते हैं। सामवेद में 5 मन्त्र पुरुष सूक्त के नाम से विख्यात है। **पुरुष सूक्त कहे जाने का कारण इन मन्त्रों के देवता का पुरुष होना है। पुरुष ब्रह्माण्ड में व्यापक परमात्मा भी है और शरीर में बद्ध जीवात्मा भी है। सारा समाज भी पुरुष है। परमात्मा समस्त सृष्टि के भीतर भी व्याप्त है और बाहर भी है, जीवात्मा शरीर में एक ही स्थान हृदय में है। यह जीवात्मा शरीर के बाहर तो बिल्कुल नहीं है। पुरुष के रूप में जीवात्मा का शरीर कर्म करने और फल भोगने का साधन है। ब्रह्माण्ड के प्रसंग में परम पुरुष की रची यह सृष्टि जीवात्माओं के लिए ही भोग प्राप्ति सहित कर्म और ज्ञान प्राप्ति तथा तदनुसार आचरण कर मोक्ष प्राप्ति का साधन है, इसमें परमपुरुष ईश्वर का अपना कोई प्रयोजन नहीं है।**

पुरुष सूक्त पर शोध उपाधि के लिए अध्ययन करने वाली डॉ. कुसुमलता आर्या जी ने अपने प्रकाशित शोध प्रबन्ध के प्राक्कथन में पुरुष सूक्त के महत्त्व का उल्लेख कर लिखा है कि यही पुरुष सूक्त ऐसा है जो चारों वेदों में आया है। इसमें एक ऐसे पुरुष का वर्णन है जिसके हजारों शिर, चक्षु तथा पाद हैं। यही एक ऐसा स्थल है जहां जीवन के एक परम सत्य को, **'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'** के अतिपरिमित शब्दों में कहकर मानों सब-कुछ कह दिया गया है। यही एक ऐसा सूक्त है जो अपने आप में परिपूर्ण है, एक सम्पूर्ण इकाई है, एक साथ इतने अधिक विषय ! अतिस्वल्प शब्दों में इतने महान् भाव !! अति सीमित अक्षरों में असीम 'अक्षर' ईशान का महिमानुवाद !!! देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। ऐसे अनेक कारणों से इसका महत्त्व विदित होता है। इस सूक्त की महत्ता के कारण पाठकों के ज्ञानार्थ हम यजुर्वेद के 31वें अध्याय को, जो पुरुष-सूक्त के नाम से विख्यात है तथा सौभाग्य से इस पर वेदों के शीर्षस्थ व अपूर्व विद्वान महर्षि दयानन्द का भाष्य भी उपलब्ध है, परिचित कराने के लिए सभी मन्त्र व उनके भावार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे पाठक सृष्टि के आरम्भ में ही ईश्वर, जीव, सृष्टि और राजा व समाज विषयक महत्त्वपूर्ण ज्ञान को जानकर लाभान्वित होंगे। मन्त्र व उनके भावार्थ आगामी पंक्तियों में प्रस्तुत हैं।

'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिम् सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम।।1।।'

भावार्थः हे मनुष्यों! जिस पूर्ण परमात्मा में हम मनुष्य आदि के असंख्य शिर, आंखें और चरण आदि अवयव हैं जो भूमि आदि से उपलक्षित हुए पांच स्थूल और पांच सूक्ष्म भूतों से युक्त जगत् को अपनी सत्ता से पूर्ण कर, जहां जगत् नहीं है वहां भी पूर्ण हो रहा है, उस सब जगत् के बनाने वाले परिपूर्ण सच्चिदानन्द स्वरूप नित्य-शुद्ध- बुद्ध-मुक्तस्वभाव परमेश्वर को छोड़ कर अन्य किसी की उपासना तुम कभी न करो किन्तु उस ईश्वर की उपासना से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करो।

पुरुषऽएवेदम् सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।।2।।

भावार्थः हे मनुष्यों ! जिस ईश्वर ने जब जब यह सृष्टि हुई है, तब-तब उसी ने रची है, इस समय वह ही इसे धारण किए हुए है, फिर विनाश करके पुनः रचेगा। जिस ईश्वर के आधार से सब जगत् वर्तमान है और बढ़ता है, उसी सबके स्वामी परमात्मा की उपासना करो, इससे भिन्न की नहीं।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाश्च पूरूषः पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

भावार्थः यह सब सूर्य- चन्द्रादि लोकलोकान्तर चराचर जितना जगत् है वह सब चित्र-विचित्र रचना के अनुमान से परमेश्वर के महत्त्व को सिद्ध कर उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय रूप से तीनों काल में घटने-बढ़ने से भी परमेश्वर के चतुर्थांश में ही रहता है (और उसके शेष तीन अंश सृष्टि से रहित होकर केवल एकमेव ईश्वर से ही परिपूर्ण हैं) किन्तु (जीवात्मा वा मनुष्य) इस ईश्वर के चौथे अंश की भी अवधि व विशालता को नहीं पाता। और इस ईश्वर के सामर्थ्य के तीन अंश अपने अविनाशी मोक्ष स्वरूप में सदैव रहते हैं। इस कथन से उस ईश्वर का अनन्तपन (सदा बना रहता है अर्थात् वह) नहीं बिगड़ता किन्तु जगत् की अपेक्षा उसका महत्त्व और जगत् का न्यूनत्व जाना जाता है।

त्रिपादुर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वड् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।4।।

भावार्थः यह परमेश्वर कार्य जगत् से पृथक तीन अंश से प्रकाशित हुआ एक अंश अपने सामर्थ्य से सब जगत् को बार-बार उत्पन्न करता है, पीछे उस चराचर जगत में व्याप्त होकर स्थित है।

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरूषः। स जातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।5।।

भावार्थः परमेश्वर से ही सब समष्टिरूप जगत् उत्पन्न होता है। वह उस जगत् से पृथक् उसमें व्याप्त भी है और उसके दोषों से लिप्त न हो के इस सब जगत का अधिष्ठाता है। इस प्रकार सामान्य रूप से जगत् की रचना को कह कर विशेष कर भूमि आदि की रचना को क्रम से कहते हैं।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्ताश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्यषश्च ये।।6।।

भावार्थः सबके ग्रहण करने योग्य जिस पूजनीय परमेश्वर ने सब जगत् के हित के लिये दही आदि भोगने योग्य पदार्थ और ग्राम के तथा वन के पशु बनाए हैं और उसकी सब लोग उपासना करें।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत।।7।।

भावार्थः हे मनुष्यों। जिससे सब वेद उत्पन्न हुए हैं, आप लोग उस परमात्मा की उपासना करो, वेदों को पढ़ो, उसकी आज्ञा के अनुकूल वर्ते के सुखी हो।

तस्मादशअजायन्त ये के चोभयादतः गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽ अजावयः।।8।।

भावार्थः हे मनुष्यों ! गौ, घोड़े आदि ग्राम के सब पशु जिस सनातन पूर्ण पुरुष परमेश्वर से ही उत्पन्न हुए हैं, तुम लोग उसकी आज्ञा का उल्लघंन कभी मत करो।

तंयज्ञंबर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽ ऋषयश्च ये।।9।।

भावार्थः विद्वान मनुष्यों को चाहिये कि सृष्टिकर्त्ता ईश्वर का योगाभ्यास आदि से सदा हृदयरूप अवकाश में ध्यान और पूजन किया करे।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादाऽउच्येते।।10।।

भावार्थः हे विद्वानो ! इस संसार में असंख्य सामर्थ्य ईश्वर का है। उस समुदाय में उत्तम अंग मुख और बाहू आदि अंग कौन हैं? यह कहिये।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यदवैश्यः पद्भ्याम् शूद्रोऽअजायत।।11।।

भावार्थः जो मनुष्य विद्या और शमदमादि उत्तम गुणों में मुख के तुल्य उत्तम हों वे ब्राह्मण, जो अधिक पराक्रम वाले भुजा के तुल्य कार्यों को सिद्ध करनेवाले हों वे क्षत्रिय, जो व्यवहारविद्या में प्रवीण हों वे वैश्य और जो सेवा में प्रवीण, विद्याहीन, पगों के समान मूर्खपन आदि न्यूनगुणयुक्त हैं, ये शूद्र करने और मानने चाहियें।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्य मुखादग्निरजायत।।12।।

भावार्थः जो यह सब जगत् इसके कारण प्रकृति से ईश्वर ने उत्पन्न किया है, उसमें चन्द्रलोक मनरूप, सूर्यलोक नेत्ररूप, वायु और प्राण श्रोत्र के तुल्य, मुख के तुल्य अग्नि, औषधि और वनस्पति रोगों के तुल्य, नदी नाड़ियों के तुल्य और पर्वतादि हड्डी के तुल्य हैं, ऐसा जानना चाहिए।

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षम् शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाम्ऽअकल्पयन ।।13।।

भावार्थः हे मनुष्यों! यह जो इस सृष्टि में कार्यरूप वस्तु है, वह विराट्रूप कार्यकारण का अवयवरूप है। ऐसा जानना चाहिये।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।14।।

भावार्थः जब बाह्य सामग्री के अभाव में विद्वान लोग सृष्टिकर्त्ता ईश्वर की उपासनारूप मानस ज्ञान यज्ञ को विस्तृत करें जब पूर्वाह्न आदि काल ही साधना एवं संकल्प करना चाहिए।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽ अबध्नन् पुरुषं पशुम।।15।।

भावार्थः हे मनुष्यों ! तुम लोग इस अनेक प्रकार से कल्पित परिधि आदि सामग्री से युक्त मानस यज्ञ को कर उससे पूर्ण ईश्वर को जान के सब प्रयोजनों को सिद्ध करो।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

भावार्थः मनुष्यों को चाहिये कि योगाभ्यास आदि से सदा ईश्वर की उपासना कर इस अनादि काल से प्रवृत धर्म से मुक्तिसुख को पाके पहिले मुक्त विद्वानों के समान आनन्द भोगें।

अदभ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमा जानमग्रे।।17।।

भावार्थः हे मनुष्यों ! जो सम्पूर्ण कार्य (सृष्टि) करनेहारा परमेश्वर कारण से कार्य बनाता है, सब जगत् के शरीरों के रूपों को बनाता है, उसका ज्ञान और उसकी (वेद विहित) आज्ञा का पालन ही देवत्व है, ऐसा जानो।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।18।।

भावार्थः यदि मनुष्य इस लोक-परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सबसे बड़े स्वप्रकाश और आनन्दस्वरूप, अज्ञान के लेश से पृथक, वर्तमान, परमात्मा को जान कर ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक हो सकते हैं। यही सुखदायी मार्ग है। इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की मुक्ति का मार्ग नहीं है।

प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतस्थुर्भुवनानि विश्वा ।।19।।

- शेष पृष्ठ 6 पर

वेद मंत्रों से होगी विश्व शान्ति

.....शान्ति चाहने वाले सभी मनुष्य ही तो हैं इसलिए जो रास्ता शान्ति प्राप्त करने का है वह जो एक के लिये है वही दूसरे, तीसरे, चौथे तथा पूरे समाज, पूरे राष्ट्र और सारे संसार के मनुष्यों के लिए एक ही है दो नहीं। क्योंकि शान्ति चाहिए आत्मा को और आत्मा तथा परमात्मा चेतन हैं ये प्रकृति की तरह जड़ पदार्थ नहीं है। मनुष्य शरीर आत्माओं को मिलते हैं भोगों को भोगने के लिये। ईश्वर भुगताने वाला है उसका शरीर नहीं होता। क्योंकि उसने कुछ भोगना नहीं है। मनुष्यों के लिये भगवान ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु अग्नि और आकाश सबके लिए बनाये हैं उसी प्रकार वेद ज्ञान की आचार संहिता भी सारे संसार के मनुष्यों के लिये एक ही है। मेरे पास न्याय प्रणाली एक ही है। यदि दो बनाता तो दुनिया मुझे भी पक्षपाती कहती किन्तु मैं पक्षपात नहीं करता मैं वेद विरुद्ध चलने वाले को शान्ति प्रदान नहीं करूंगा।.... -सम्पादक

संसार के प्रत्येक प्राणी को सुख चाहिए। दु:ख की छाया भी अपने निकट कोई नहीं आने देना चाहता। मनुष्य को ईश्वर ने एक ऐसा प्राणी बनाया है जो स्वयं भी सुखी रह सकता है और दूसरे प्राणियों को भी सुखी रख सकता है। इसी सुख-शान्ति को तथा मोक्ष को प्राप्त करने के लिए ईश्वर ने अपनी ओर से वेद का विधान दिया हुआ है। इसी कारण से सृष्टि के आरम्भ से लेकर द्वापर युग तक पूरा संसार शान्त था।

वेद सृष्टि का सबसे पहला ज्ञान है और संस्कृत भाषा सबसे पहली भाषा है। वेद का ज्ञान और भाषा साथ-साथ चार ऋषियों की आत्माओं में दिये थे। बाद में वेद प्रचार के लिए ऋषियों ने दर्शन शास्त्र और उपनिषद् बनाए। कालान्तर में वेदों का पढ़ना-पढ़ाना बन्द हो गया और संसार अशान्ति की ओर अग्रसर हो गया। वेद की सबसे बड़ी महानता यही है कि धर्म सारे संसार का एक है जिसका नाम सत्य सनातन वैदिक धर्म है। पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्यों की जाति एक है और वह है मनुष्य जाति। ईश्वर भी सबका एक है जिसका नाम ओ३म् है और उसकी पूजा का तरीका भी सबके लिए एक है, तभी संसार में एकता थी।

वेद में ईश्वर को निराकार बताया है। वेद प्रचार बन्द होने पर भारत में ही अनेक सम्प्रदाय धर्म के नाम पर बन गये और लोग शरीर धारी मनुष्यों को भगवान मानने लगे। भारत से शिक्षा लेकर विदेशों में भी अनेक सम्प्रदाय हो गये और धर्म-ईश्वर के नाम पर झगड़े होने आरम्भ हो गये। तब कुछ कम्युनिस्ट बन गये और कहने लगे ये धर्म-ईश्वर मानना लड़ाई-झगड़े की जड़ है। तुम धर्म-ईश्वर को मानना बन्द करो हम तुम्हें शान्ति देंगे, किन्तु वे भी संसार में शान्ति न ला सके। वे स्वयं भी अशांत हैं। एक ओर संसार भर के वैज्ञानिक घातक हथियार बनाने में लगे हैं दूसरी ओर अनेक प्रकार के वाहन और घर में रखने का सुख-सुविधा का सामान भी बनाकर दे रहे हैं फिर भी संसार में शान्ति कोसों मील दूर है।

संसार को शान्ति प्राप्त कराने के लिए सिनेमा बनाये हैं, उन्हीं सिनेमाओं के सीन देखकर लोग अपराध करने लगे। उन्होंने संसार की अशान्ति और बढ़ा दी। इस कार्य में लगे व्यक्ति सभी अशान्त हैं वे किसे शान्ति देंगे अर्थात् किसी को नहीं। ये लोग स्वयं अशान्ति के चौराहे पर खड़े हैं।

अपने-अपने राष्ट्रों को शान्ति दिलाने के लिए हमारे निकट भूतकाल में दो विश्वयुद्ध हुए। एक सन् 1914 से 1918 तक और दूसरा 1939 से 1945 तक चला। परिणाम स्वरूप ऐसे भयंकर युद्ध हुए जिनमें करोड़ों की संख्या में जनहानि हुई, अरबों रुपये की सम्पत्ति नष्ट हुई और अनेक सुन्दर सुशोभित नगर खंडहरों में परिवर्तित हो गये। शान्ति किसी राष्ट्र को प्राप्त नहीं हुई।

पण्डित शिव कुमार शास्त्री जो संसद सदस्य थे उन्होंने अपनी पुस्तक श्रुति-सौरभ के पृष्ठ संख्या 233 में लिखा है कि विश्व युद्धों से संसार भयभीत हो गया और उस समय के राष्ट्रों ने मिलकर एक 'राष्ट्र संघ' 'लीग ऑफ नेशन्स' की स्थापना की। सारी पृथिवी के उस समय के 64 राष्ट्रों में से 59 देश इसके सदस्य थे। संघ की बैठकों के लिए 'हेग' में शान्ति-मन्दिर की स्थापना की गयी और सभी देशों की अनुमति और सहायता से शान्ति-मन्दिर स्थापित हुआ, किन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। शान्ति स्थापित न हो सकी।

आतंकी कहते हैं हम हथियारों के बल पर शान्ति प्राप्त करेंगे और दूसरों को भी शान्ति देंगे किन्तु वे भी अशान्त हैं। इस प्रकार यह सारा संसार उलटे मार्ग पर बढ़ा चला जा रहा है। संसार जड़ पदार्थों में शान्ति खोज रहा है जहां उसे शान्ति प्राप्त नहीं होगी। शान्ति का भण्डार ईश्वर है उसे कोई जानता नहीं।

भारत जो कभी विश्व का गुरु था वह आज स्वयं अन्ध-विश्वास और अन्ध-परम्पराओं में फंस कर रह गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 19वीं सदी में पूरे भारत (लाहौर सहित जो अब पाकिस्तान में है) में भ्रमण करके इस देश को जगाकर वेदामृत पिलाया। ऋषि ने सारे संसार के लिए कहा था कि ''यह संसार वेदों की ओर लौटे' किन्तु पूरे संसार ने तो क्या भारत में भी बहुत कम मनुष्यों ने उनकी बात को माना इसीलिए आज भारत धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है और अशान्त है।

अपने देश और दुनियां की हालत देखकर हमने प्रात:काल यज्ञ-हवन करके शान्ति पाठ में मन लगाकर ईश्वर से प्रार्थना में कहा कि भगवान द्युलोक, अंतरिक्ष और पृथ्वी लोक से हमें शान्ति मिले, जल से, औषधियों से और वनस्पतियों से हमें शान्ति प्राप्त हो, सब विद्वान शान्ति उत्पन्न करें, वेद ज्ञान भी शान्ति देवें, सब जगत के पदार्थ हमें शान्ति प्रदान करें और शान्ति भी सच्ची शान्ति देने वाली हो। इसी प्रकार हम सबको भी आप शान्ति दीजिए।

ईश्वर रोज सब कुछ सुनता है इसलिए उस समय आत्मा ने प्रेरणा दी कि मैंने सृष्टि के आदि में जो वेद विधान मनुष्यों को दिया था उसके अनुसार कर्म करें, क्योंकि मेरा कर्मफल का वेद विधान अटल है। इसलिए शान्ति भी कर्मफल में ही मिल सकती है और वह भी पूरे संसार को एक साथ मिलेगी। जब यह संसार शान्ति के कर्म ही नहीं करेगा तो शान्ति कैसे मिलेगी। अब संसार ने मेरे बनाये और चार ऋषियों की आत्माओं में बताये वेद धर्म को छोड़ कर अपने अलग धर्म बना लिये फिर शान्ति कैसे मिलेगी।

मैंने (ऋ.मण्डल 1। सूक्त 164। मंत्र 20 में स्पष्ट) ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों अनादि-अनन्त बताकर ईश्वर से जीव और जीव से प्रकृति तीनों के भिन्न स्वरूप बताये हैं। यही ऋषि दयानन्द जी ने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में दर्शाया है। इस त्रैतवाद को संसार न मानकर अद्वैत या द्वैतवाद को अपनायेगा तो शान्ति कैसे मिलेगी। ईश्वर जीव और प्रकृति को अलग-अलग पदार्थ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास के पृष्ठ संख्या 274 पर जगत के कारण तीन बताये हैं।

आगे प्रभु बोले जब संसार के मनुष्य दूसरे देश के व्यक्तियों की हत्या करके अपना साम्राज्य स्थापित करेंगे तो शान्ति कैसे मिलेगी? दूसरों के मन में और घरों में आग लगाएंगे तो शान्ति कौन देगा? शान्ति प्राप्त करने के लिये शान्ति के कार्य भी करें। प्रभु कृपा बिना भी शान्ति नहीं मिलती जैसे कोई पाप कर्म आगे आ गया तो पकी हुयी फसल पर भी ओले पड़ जायेंगे। संसार की अशान्ति के कारण तो बहुत हैं किन्तु मुख्य कारणों को जानना अत्यावश्यक है। मुख्य कारण यह है कि जब संसार भर के गुरुओं का मस्तिष्क ठीक होगा तभी शान्ति मिलेगी।

हमने कहा भगवन् संसार के गुरुओं का मस्तिष्क कैसे ठीक होगा? भगवन बोले यह बात अधिक ध्यान से समझने की है। पहली बात यह समझें कि मनुष्य एक इकाई है, अनेक मनुष्यों के संगठन को कहते हैं समाज, अनेक समाजों को मिलाकर बनता है देश और अनेक देशों को मिलाकर बनता है संसार। शान्ति चाहने वाले सभी मनुष्य ही तो हैं इसलिए जो रास्ता शान्ति प्राप्त करने का है वह जो एक के लिये है वही दूसरे, तीसरे, चौथे तथा पूरे समाज, पूरे राष्ट्र और सारे संसार

- शेष पृष्ठ 5 पर

ग्रन्थ परिचय

सन्ध्योपासना

प्रश्न 1 : जब महर्षि मथुरा में स्वामी विरजानन्द जी से विद्याध्ययन करने के बाद आगरा में रहे, तो उन्होंने सर्वप्रथम कौन-सी पुस्तक लिखी थी?

उत्तर : मथुरा में स्वामी विरजानन्दजी से विद्या ग्रहण करके महर्षि ने जब आगरा में निवास किया, तो उन्होंने सर्वप्रथम 'सन्ध्या' की पुस्तक लिखी।

प्रश्न 2 : यह पुस्तक कौन से सन् में लिखी थी?

उत्तर : आगरा में महर्षि संवत् 1920 (सन् 1863, अप्रैल-मई) से डेढ़ वर्ष तक रहे थे। (एक अन्य स्थान पर दो वर्ष रहने का उल्लेख भी मिलता है।) इसी अवधि में यह पुस्तक लिखी गयी थी। निश्चित समय का उल्लेख नहीं है।

प्रश्न 3 : इस पुस्तक में केवल सन्ध्या के मन्त्र थे अथवा कुछ अन्य विषय भी था?

उत्तर : श्री पं लेखराम जी द्वारा लिखित जीवनचरित में लिखा है- 'स्वामी जी के उपदेश से एक सन्ध्या की पुस्तक, जिसके अन्त में 'लक्ष्मी-सूक्त' था छपाई गयी।

प्रश्न 4 : उस समय इस पुस्तक के छापने में कितना खर्च हुआ था?

उत्तर : उस समय इस पुस्तक की तीस हजार के लगभग प्रतियां प्रकाशित की गयी थीं, जिन पर डेढ़ हजार रुपया व्यय हुआ था।

प्रश्न 5 : यह व्यय किसने किया था?

उत्तर : यह व्यय आगरा के ही एक सज्जन महाशय रूप लाल ने किया था।

प्रश्न 6 : इस पुस्तक का मूल्य क्या रखा गया था?

उत्तर : पं. लेखराम जी के अनुसार, पुस्तक एक आने मूल्य पर बेची गयी थी। जबकि पं. महेश प्रसादजी के अनुसार, ये पुस्तकें मुफ्त बांटी गयी थीं। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी विचार में - 'यह सम्भव है कि कुछ हजार प्रतियां बेची गयी हों और कुछ मुफ्त में बांटी गयी हों।

प्रश्न 7 : यह पुस्तक कहां से छपी थी?

उत्तर : पुस्तक आगरा के 'ज्वाला प्रकाश प्रेस' में छपी थी।

प्रश्न 8 : महर्षि ने सर्वप्रथम यही पुस्तक क्यो लिखी?

उत्तर : महर्षि ईश्वर-भक्ति पर विशेष बल देते थे,अत: उन्होंने अपनी रुचि के अनुसार सर्वप्रथम यही पुस्तक लिखी।

प्रश्न 9 : क्या यह पुस्तक अब उपलब्ध है?

उत्तर : नहीं, अब यह पुस्तक स्वतन्त्र रूप में उपलब्ध नहीं है।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

पुस्तक मेलों की श्रृंख्ला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज शिलांग के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत के मेघालय में

शिलाँग पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार सम्पन्न

आर्य समाज की स्थापना से लेकर कुछ दशक पूर्व तक आर्य समाज में स्वाध्याय की परम्परा विद्यमान थी । लेकिन कुछ काल से यह परम्परा कुछ क्षीण सी होती दिख रही है, जिस कारण सामान्य गृहस्थ वैदिक सिद्धांतों से कम ही परिचित हो पा रहे हैं विशेष कर युवा पीढ़ी। आर्य समाज के उत्सवों पर भी वैदिक साहित्य की अनुपलब्धता एवं साहित्य का श्रोताओं द्वारा न खरीदे जाने से भी वैदिक साहित्य की बिक्री का दिनों दिन घटना एक कारण है। साहित्य के प्रति इस बेरुखी से आर्य समाज के प्रकाशकों एवं वैदिक लेखकों का मायूस होना स्वाभाविक है। ऐसे में पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य की उपलब्धता संजीवनी के समान है। पुस्तक मेले के माध्यम से युवाओं का जीवन निर्माण होना अनिवार्य है क्योंकि यह वैदिक विचारधारा की विशेषता और आर्यों के पुरुषार्थ का फल है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार के अन्तर्गत नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित आर्य समाज शिलांग के सहयोग से पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। साहित्य स्टाल का उद्घाटन शिलाँग आर्यसमाज के प्रधान श्री विमल कुमार बजाज के कर कमलों द्वारा किया गया। इस पुस्तक मेले में श्री ओम प्रकाश, श्री रवि तिवारी, शिव प्रसाद जी का सहयोग सराहनीय रहा। शिलांग ईसाई बाहुल्य क्षेत्र है यहां आबादी की दृष्टि से मुस्लिमों की संख्या दूसरे नम्बर पर है। ऐसी विषम परिस्थितियों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक साहित्य के प्रचार का विगुल बजाना एक सराहनीय कदम है। स्टाल पर पधारे कुछ लोगों का कहना था कि जिस प्रकार हम भारतीय सेना का सम्मान करते हैं उसी प्रकार आर्य समाज व वैदिक साहित्य का भी सम्मान करते हैं।

शिलाँग पुस्तक मेले में सभा के वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल पर साहित्य देखती महिलाएं। आर्यसमाज शिलाँग के प्रधान श्री विमल कुमार बजाज एवं मन्त्री श्री रवि तिवारी एवं अन्य अधिकारियों के साथ सभा प्रतिनिधि श्री रवि प्रकाश। स्टाल पर साहित्य प्रेमी साहित्य खरीदते हुए।

संस्कृत शिक्षक संघ द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से 10 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर सम्पन्न

राजधानी पब्लिक स्कूल विकास नगर हस्तसाल दिल्ली में संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया। दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र कुमार ने जन सामान्य तक संस्कृत भाषा को पहुंचाने हेतु इस प्रकार के अनेक शिविरों को आयोजित करने का लक्ष्य रखा है। उनके अनुसार संस्कृत भाषा को जन सामान्य तक पहुंचाने से अनेक अन्ध विश्वासों का अन्त होगा तथा समाज में मानवीय मूल्यों एवं संस्कारों की स्थापना होगी।

कार्यक्रम में छात्रों ने संस्कृत गीत, नृत्यगीत तथा नाटकों की प्रस्तुति से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। 10 दिन से छात्र संस्कृत में दैनिक व्यवहार कर रहे थे।

संस्कृत सम्भाषण कार्यक्रम में संस्कृत गीत एवं नृत्यगीत प्रस्तुत करते बच्चे।

समापन समारोह में पद्म श्री डॉ. रमाकान्त शुक्ल ने छोटे-छोटे श्लोकों को बताया जिन्हें जीवन में उतार कर सुखी एवं समृद्ध रहा जा सकता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. एन. पाण्डेय पूर्व कुलपति राजीव गान्धी आयुर्विज्ञान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय अरुणाचल प्रदेश ने संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति की प्रशंसा की। समारोहका संचालन शिविर के सहभागी छात्र मेधाव्रत ने किया।

डॉ. ब्रजेश गौतम, डॉ. वी. दयालु, डॉ. राजेश, श्री वीरेन्द्र आर्य, अनिल दीक्षित एवं विद्यालय प्रबन्धक श्री उमेश चन्द्र त्यागी ने सभी को धन्यवाद वचन कहे। -*डॉ. ऋता शर्मा, मीडिया सचिव*

आर्यसमाज महाराजपुर के सदस्य चितरंजन चौरसिया सम्मानित

आर्य समाज महाराजपुर जिला छतरपुर (म.प्र.) के सभासद् प्रगतिशील कृषक एवं समाजसेवी चितरंजन चौरसिया को समाज सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिये म0प्र0 शासन के पिछड़ा वर्ग एवं अल्प संख्यक कल्याण विभाग द्वारा म0प्र0 रामजी महाजन पुरस्कार 2014 से सम्मानित किया गया । भोपाल के समन्वय भवन में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिहं चौहान ने चितरंजन चौरसिया को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न, शॉल एवं श्रीफल के साथ एक लाख रुपये का चौक प्रदान किया। श्री चौरसिया को यह पुरस्कार समाज के कमजोर एवं पिछड़ा वर्ग के उत्थान के लिये कार्य करने, खेती में जैविक खाद को बढ़ावा देने, किसानों को जैविक खेती के लिये प्रेरित करने के साथ ही पान खेती की समस्याओं के निराकरण के प्रयास करने के अलावा सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने एवं आर्य समाज द्वारा आयोजित नेत्र शिविरों में सक्रिय योगदान तथा लोगों में जागरुकता लाने के लिये दिया गया। इस अवसर पर प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं सांसद श्री नंदकुमार सिंह चौहान पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के मंत्री श्री अंतरसिंह आर्य पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री आरिफ वेग, श्रीमती कृष्णा गौर, श्री शैतानसिंह पाल, म0प्र0 पिछड़ा वर्ग कल्याण परिषद के अध्यक्ष श्री सरदारसिंह डंगस, आयुक्त सुश्री उर्मिल मिश्रा, अपर मुख्य सचिव श्री राकेश अग्रवाल, श्री आर.बी. सोनी, सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग एवं अल्प संख्यक कल्याण जिला छतरपुर एवं अजय अमर चौरसिया सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिहं चौहान स प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते श्री चितरंजन चौरसिया

आर्य समाज के प्रधान जय नारायण आर्य, उप प्रधान लखन लाल आर्य, मंत्री इन्द्रप्रकाश आर्य, सभासद दीनदयाल आर्य, दयाराम आर्य एवं लेखराम चौरसिया सहित अन्य लोगों ने चितरंजन चौरसिया को बधाई देते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। - *इन्द्र प्रकाश आर्य, मन्त्री*

पृष्ठ 3 का शेष

भावार्थः जो यह सर्वरक्षक ईश्वर स्वयं उत्पन्न न होता हुआ अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न करता है और उसमें प्रविष्ट होकर सर्वत्र विचरता है। अनेक प्रकार से प्रसिद्ध जिस ईश्वर को विद्वान लोग ही जानते हैं, उस जगत् के आधाररूप सर्वव्यापक परमात्मा को जानकर मनुष्यों को आनन्द भोगना चाहिये।

यो देवेभ्यऽआतपति यो देवानां पुरोहितः। पर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये।।20।।

भावार्थः हे मनुष्यों! जिस जगदीश्वर ने सब (प्राणियों) के हित के लिये अन्न आदि की उत्पत्ति हेतु सूर्य को बनाया है, उसी परमेश्वर की उपासना करो।

रूचं ब्राह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे।।21।।

भावार्थः विद्वानों का यही पहला कर्त्तव्य है कि वेद, ईश्वर और धर्मादि में रूचि, (वेदधर्म का) उपदेश, अध्यापन, धर्मात्मता, जितेन्द्रियता, शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाना। ऐसा करने से ही सब उत्तम गुण और भोग (मनुष्यों को) प्राप्त हो सकते हैं।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण।।22।।

भावार्थः हे राजा आदि मनुष्यों! जैसे ईश्वर के न्याय आदि गुण, व्याप्ति, कृपा, पुरुषार्थ, सत्य रचना और सत्य नियम हैं वैसे ही तुम लोगों के भी हों जिससे तुम्हारा उत्तरोत्तर सुख बढ़े।

हम आशा करते हैं कि इस लेख के अध्ययन से पाठक वेदों में वर्णित ईश्वर व जीव के स्वरूप, जीवात्मा व मनुष्यों को अपने कर्त्तव्य, उद्देश्य एवं लक्ष्य सहित उपासना आदि का ज्ञान होगा। पाठक वेदादि ग्रन्थों सहित ऋषियों के दर्शन, उपनिषद एवं महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि कर्मों से दुःखों से छूटकर मोक्ष मार्ग पर अग्रसर होंगे और इहलौकिक व पारलौकिक जीवन की उन्नति करेंगे। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

पृष्ठ 4 का शेष

वेद मंत्रों से होगी विश्व .....

के मनुष्यों के लिए एक ही है दो नहीं। क्योंकि शान्ति चाहिए आत्मा को और आत्मा तथा परमात्मा चेतन है ये प्रकृति की तरह जड़ पदार्थ नहीं है। मनुष्य शरीर आत्माओं को मिलते हैं भोगों को भोगने के लिये। ईश्वर भुगताने वाला है उसका शरीर नहीं होता। क्योंकि उसने कुछ भोगना नहीं है। मनुष्यों के लिये भगवान ने सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु अग्नि और आकाश सबके लिए बनाये हैं उसी प्रकार वेद ज्ञान की आचार संहिता भी सारे संसार के मनुष्यों के लिये एक ही है। मेरे पास न्याय प्रणाली एक ही है। यदि दो बनाता तो दुनिया मुझे भी पक्षपाती कहती किन्तु मैं पक्षपात नहीं करता। मैं वेद विरुद्ध चलने वाले को शान्ति प्रदान नहीं करूंगा। इसलिए सबके कर्म का फल मैं वेदानुसार चलकर ही देता हूं।

दूसरी बात यह है कि मनुष्य संसार में सब प्राणियों से अधिक जल, वायु, अन्न, फल, फूल, सब्जी, औषधि और समस्त वनस्पतियों में प्रदूषण फैला रहा है। खेती में कीट नाशक दवाओं का प्रयोग भी प्रदूषण का कारण है। इसीलिए मनुष्यों को वेद में दिशा निर्देश दिया गया है कि सब मनुष्य प्रातः-सायं यज्ञ-हवन करें विधि से, वेद मंत्र बोलकर और मंत्रों का अर्थ भी जानना चाहिए यदि अर्थ न जानते हों तो यज्ञ न करें। देखें यजुर्वेद अध्याय 1 और मंत्र 27वां।

संसार के गुरुओं का मस्तिष्क ठीक तब होगा जब सारे संसार में वेद मंत्रों से हवन होंगे। शुद्ध घी, सामग्री और समिधाओं से तब शुद्ध वायु सूर्यलोक में जायेगी। द्युलोक (सूर्य) अंतरिक्ष लोक के बादलों के जल में उस शुद्ध वायु को मिलायेगा। उस शुद्ध जल की वर्षा से सभी खाद्य पदार्थों की शुद्धि होगी। उनके सेवन करने से होगा सही मस्तिष्क तब उनके मुख से होंगे वेद प्रवचन और जब सारे संसार में भाईचारा होगा तब ईश्वर की कृपा से सबको शान्ति एक साथ मिलेगी। दूसरा शान्ति का रास्ता न है और न हो सकता है। -***सत्यवीर आर्य***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आपके पत्र

पुस्तक मेले में प्रचार : एक सराहनीय कार्य

यदि किसी समाज को जीवित रखना हो तो उसके साहित्य का प्रचार-प्रसार होना अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का देश भर में राष्ट्रीय स्तर के पुस्तक मेलों में भागीदारी सुनिश्चित करना एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यह प्रचार-प्रसार की दृष्टि से मील का पत्थर साबित होगा। लेकिन दिल्ली सभा ने पुस्तक मेलों में होने वाले खर्चों की परवाह किये बिना इस कार्य को अपने हाथों में लिया है। यह बहुत सराहनीय कार्य है। इससे न केवल वैदिक साहित्य सभी विचारधारा के लोगों के हाथों में पहुंच रहा है बल्कि स्थानीय आर्य समाजें भी अब इसमें अपना सहयोग दे रहीं हैं जिससे उत्साह का वातावरण बन रहा है। यदि इसकी निरंतरता बनी रही और यह वार्षिक रूप से हर शहर में होने लगा तो इसके दूरगामी परिणाम हमें देखने को मिलेंगे। दिल्ली सभा के सभी पदाधिकारी व वह लोग बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इसमें परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से सहयोग किया। प्रकाशक वर्ग में भी उत्साहवर्धन हुआ है। -***अजय कुमार आर्य, गोविन्दराम हासानन्द***

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर''

सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो।

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज जनकपुरी बी-2 ब्लॉक नई दिल्ली द्वारा एकत्रित राशि

306. सर्वश्री राजीव हांडा 500/-
307. श्रीमती ज्ञान ग्रोवर 500/-
308. श्रीमती सरला गुप्ता 5000/-
309. सुधीर गुप्ता 5100/-
310. कृष्ण देव 500/-
311. कीर्ति चावला 15000/-
312. श्रीमती सुरक्षा गक्खड़ 1100/-
313. श्रीमती सुदेश कालड़ा 500/-
314. श्रीमती पुष्पा खुराना 1000/-
315. श्रीमती उषा भाटिया 1000/-
316. श्रीमती निर्मला गुप्ता 1100/-
317. यशपाल 500/-
318. गुप्त दान 500/-
319. जगदीश गुलाटी 500/-
320. संतोष कुमार आर्य 500/-
321. श्रीमती विमला मलिक 500/-
322. के.वी. चोपड़ा 501/-
323. श्रीकृष्ण बवेजा 500/-
324. एम.एल. ग्रोवर 500/-
325. वीना एवं विनोद वढेरा 5100/-

आर्य समाज पंखा रोड जनकपुरी सी ब्लॉक नई दिल्ली द्वारा एकत्रित राशि

236. वेद प्रकाश हांडा 5000/-
237. जगदीश प्रसाद गुप्ता 500/-
238. प्रताप सिंह गुप्ता 500/-
239. भारतीय योग संस्थान आर्यसमाज सी-3, जनकपुरी 3150/-
240. अजय सैनी 500/-

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 द्वारा एकत्रित राशि 6000/-

241. श्री ओम् प्रकाश भाटिया
242. श्री हरदेव लाल डुमरा
243. डॉ. आर. एम. मायर
244. श्री जय पाल आर्य
245. श्री योगेन्द्र प्रताप दौरेनिया
246. श्रीमती रेशा नागर
247. श्रीमती सुहाग रानी
248. श्रीमती रमा मोंगिया
249. श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा
250. श्री राम देव चोपड़ा
251. श्री ओम् प्रकाश पाण्डेय
252. श्री हरवंश लाल शर्मा
253. श्रीमती संतोष भारती
254. श्री दीन दयाल डुडेजा
255. श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता
256. श्रीमती कमला मोहन
257. श्रीमती सुधेश मायर
258. श्री अरुण विनायक
259. श्री वेद भल्ला
260. श्री ओम् प्रकाश ग्रोवर
261. श्री गोवर्धन नरुला

-क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

आप भी अपनी दानराशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम भेज सकते हैं अथवा सभा के निम्नलिखित बैंक खाते में सीधे जमा करा सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के बाद श्री विजय आर्य (9540040339) को अवश्य सूचित करें ताकि रसीद भेजी जा सके।

"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा" खाता सं. 910010008984897
Axis Bank Karol Bagh, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 75/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

आर्य समाज डी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में हुआ संस्कृत शिविर का आयोजन

दिल्ली प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् के विविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत दिल्ली के समस्त आर्य समाजों में संस्कृत शिविरों का अवकाशकालीन व ऐच्छिक आयोजनों का भी महत्व पूर्ण स्थान है। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत दिल्ली के आर्य समाज डी. ब्लाक, जनकपुरी में संस्कृत शिविर का आयोजन किया गया। 21 जून 2015 को विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान तथा आर्य समाज सी-3 जनकपुरी के प्रधान श्री शिव कुमार मदान और मंत्री श्री अजय तनेजा के सानिन्ध्य में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री कर्मयोगी जी ने उत्कर्ष मेल के संपादक का इस अवसर पर सम्मान किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री रजनीश वर्मा प्रचार मंत्री ने किया। लगभग पचास लोगों ने इस शिविर में भाग लिया। संस्कृत शिक्षण धनन्जय शास्त्री द्वारा बड़े कौशल से किया गया। - ***मन्त्री***

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर (उ.प्र.) का 61वां वार्षिकोत्सव समारोह सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ हुआ। तत्पश्चात् वैदिक विद्वान आचार्य श्री हरिशंकर अग्निहोत्री जी ने कहा कि वेद में कहा गया है कि मरोगे नहीं, मरोगे नहीं डरो मत। आत्मा और शरीर की तुलना उन्होंने दो लकड़ी के टुकड़ों से करते हुए समझाया कि नदी में दो लकड़ी के अलग-अलग टुकड़े पानी में तैर रहे होते हैं तो एक शरीर और दूसरा टुकड़ा आत्मा होता है। दोनों टुकड़ों का मेल जीवन है और अलग होना मृत्यु है।

यही जीवन का यथार्थ है। मरने वाला शरीर है आत्मा नहीं। आत्मा के विषय में श्री कृष्ण भी गीता में कहते हैं कि हम आज भी हैं, कल भी थे और हमेशा रहेंगे। हम नहीं बदले हमारे संस्कार बदल गए हैं। आत्मा शरीर के मरने के बाद भी नहीं मरता। न जन्म लेता है न मरता है। आत्मा ऐसी स्वतंत्र सत्ता है जिसका विनाश नहीं होता। धन, आयु और सम्मान से मनुष्य कभी संतुष्ट नहीं होता। इसकी चाह बनी रहती है। हमारा लक्ष्य धर्म, सत्य सेवा, न्याय, ज्ञान, विद्या होना चाहिए, न कि धन, आयु, सोना, चांदी आदि। उन्होंने कहा बेटा बाजू होता है बेटी दिल होती है। पुरुष कमजोर हो कम पढ़ा-लिखा हो तो भी काम चलेगा लेकिन महिला के अनपढ़ व कमजोर होने पर पतन निश्चित है, उत्थान नहीं होगा और आने वाली पीढ़ियां भी कमजोर व अनपढ़ होंगी क्योंकि माता ही निर्माता है। महिला के अनपढ़ या कमजोर होने पर वर्तमान में महिला का सम्मान गिरा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजसिंह चौहान ने की। - ***मन्त्री***

हिण्डौन हाउस जयपुर में सद्बुद्धि यज्ञ सम्पन्न

7 जून आर्य समाज जयपुर (दक्षिण) के तत्वावधान में हिण्डौन हाउस में समय पूर्व यौन लक्षण, यौन अपराध, बाल अपराधों, मोटापा, डायविटीज, थायरायड, हायपरटैन्शन, अवसाद व हिंसा का कारण विकृत भोजन से बचने हेतु सद्बुद्धि यज्ञ किया गया। यज्ञ का संचालन यशपाल यश ने किया। इस अवसर पर इसके पक्ष में जसवंत राय, रामचरण पोसवाल, बाबूलाल शर्मा, रामकिशोर शर्मा, अमरसिंह आर्य व राजेश जोगी सहित अनेक लोगों ने बासी, डिब्बाबन्द, अभक्ष्य, अखाद्य, प्राण लेवा बीमारियों के कारक युक्त व पोषक तत्वों रहित भोजन त्यागने व सामाजिक चेतना का संकल्प लिया।

- ***मन्त्री***

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर, जिला-भरतपुर (राज.) में महर्षि कृत आर्ष पाठ विधि तथा राज.मा.शि. बोर्ड की दोनों पाठ विधि अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती हैं। संगीत एवं वाद्ययंत्रों का अभ्यास तथा कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रतिदिन कराया जाता है। कक्षा 4,5, व 6 में प्रवेश प्रारंभ हो रहा है। इस वर्ष केवल 30 छात्राओं को ही प्रेवश दिया जायेगा। भजनोपदेशिका बनने की इच्छुक छात्रा एवं महिलायें भी सम्पर्क करें।

अध्यापिकाएं चाहिए

1. आर्ष कन्या गुरुकुल, भुसावर, जिला-भरतपुर (राज.) में महर्षि कृत आर्ष पाठ विधि में संस्कृत व्याकरण आदि पढ़ाने में सक्षम विदुषी की आवश्यकता है।
2. कन्या गुरुकुल के उपदेशिका विद्यालय में वाद्ययंत्रों में निपुण संगीत शिक्षिका।
3. कम्प्यूटर में दक्ष शिक्षिका।

सेवाव्रति, अनुभवी, योग्य एवं समर्पित व्यक्ति तुरंत संपर्क करें।

- कु. प्रियंका आर्या
मो. 9694892735, 8441087408

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मल्हार गंज, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

प्रधान : डॉ. दक्षदेव गौड़
मन्त्री : डॉ. विनोद आहलुवालिया
कोषाध्यक्ष : श्रीमती रेणु गुप्ता

आर्यसमाज विज्ञान नगर कोटा (राजस्थान)

प्रधान : जे. एस. दुबे
मन्त्री : श्री राकेश चड्ढा
कोषाध्यक्ष : डॉ. किशोरीलाल दिवाकर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर आरम्भ

सार्वदेशिक आर्य वीरांगनादल के राष्ट्रीय शिविर एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग का भव्य उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा 'नवयुवतियां आत्म विश्वास, चरित्र निर्माण से सर्वांगीण विकास करें। अंधविश्वास व कुरीतियों का निवारण आर्य समाज व वीरांगना दल के शिविरों के माध्यम से सम्भव है। वैदिक मान्यताओं से उन्हें सही दिशा दी जा सकती है।'

शिविराध्यक्षा साध्वी डॉ. उत्तमायति ने बताया, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात व अन्य राज्यों से 150 कन्याएं भाग ले रही हैं जिन्हें योगासन, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, वैदिक शिक्षा व नैतिक संस्कार दिये जा रहे हैं। शिविर में व्यक्तित्व विकास, कानूनी शिक्षा, शारीरिक ज्ञान, सेल्फ ग्रुमिंग सहित संस्कृत अकादमी की ओर से प्रतिदिन संस्कृत सम्भाषण कला से भी युवतियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस अवसर पर संचालिका मृदुला चौहान, ब्रह्मचारिणी सुमेधा, आर्य समाज के प्रधान सत्यानंद आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री राजीव आर्य, वीना आर्या, विमला मलिक, आरती खुराना ने वीरांगनाओंको प्रेरक विचार दिये।

- ***चन्द्रमोहन आर्य, प्रैस सचिव***

आर्य समाज सागरपुर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

आर्य समाज सागरपुर में 21 जून 2015 को योग कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सभी कार्यकारिणी, सभासद, सदस्यगण, सदस्याएं, आर्यवीर दल के आर्य वीर व वीरांगनाएं एवं सागरपुर निवासियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। योग दिवस के इस कार्यक्रम में श्री विकास आर्य ने योगाभ्यास कराया। संख्या की दृष्टि से कार्यक्रम सफल रहा। -***मानधाता सिंह, मंत्री***

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा

''यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. संस्कृत शिक्षण केन्द्र व विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थ अध्ययन केन्द्र''

दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा इस वर्ष 2015-2016 में यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ. संस्कृत शिक्षण केन्द्र व विशिष्ट संस्कृत ग्रन्थ अध्ययन केन्द्र के अर्न्तगत संस्कृत, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, वैदिक चिकित्सा विज्ञान एवं मर्मचिकित्सा, आयुर्वेद, योग प्रशिक्षण की कक्षाएँ दिल्ली संस्कृत अकादमी परिसर में आयोजित की जा रही है। इन कक्षाओं में अध्यापन कार्य विशिष्ट विद्वानों द्वारा करवाया जायेगा। निर्धारित योग्यता रखने वाले प्रवेशार्थी पाठ्यक्रम में प्रवेश पा सकते है। अधिक जानकारी के लिए लॉगऑन अथवा ईमेल करें -

Web Site:- www.sanskritacademy.delhi.gov.in
Facebook: - www.facebook.com/delhisanskritacademy
Email :- delhisanskritacademy@gmail.com - ***डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, सचिव***

कन्या गुरुकुलों के लिए वैदिक विदुषियां चाहिए

अनेक राज्यों में आर्ष वैदिक कन्या गुरुकुल खोलने की विभिन्न आर्यसमाजों ने इच्छा जताई है। अत: जिन विदुषी बहनों ने गुरुकुलीय पद्धति से शिक्षा प्राप्त की हो तथा इस कार्य के लिए समय दे सकती हों कृपया मो. 9650183339, 9958174441 पर सम्पर्क करें। - ***महामन्त्री***

नि:शुल्क सेवा उपलब्ध

वैदिक विदूषी आचार्या सुनीता शास्त्री जी (रेवाड़ी-हरियाणा) की वैदिक प्रवचनों/भजनों के लिए नि:शुल्क सेवा उपलब्ध हैं। आर्यसमाजें उन्हें आमन्त्रित करने के लिए सम्पर्क करें

- मो. 09416371926

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - हैल्प लाइन

समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें-

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग -	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा -	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता -	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु-	श्री अर्जुन देव चड्ढा (9414187428)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य -	श्री अशोक कुमार (9540040322)
घर-घर यज्ञ योजना	श्री सत्यप्रकाश आर्य (9650183335)

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25/26 जून, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 जून, 2015

बच्चों के ज्ञान विकास के लिए अमूल्य भेंट
बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

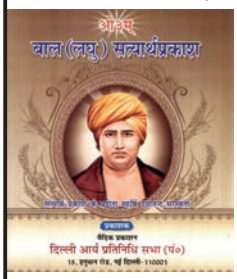

वह सन्तान बड़ी भाग्यशाली है जिसके माता-पिता धार्मिक व विद्वान हों। अत: माता-पिता का सुयोग्य होना आवश्यक है। जो माता-पिता और आचार्य शिष्य को उचित शिक्षा व ताड़न करते हैं वे मानो अपनी संतान एवं शिष्य को अपने हाथों अमृत पिला रहे हैं। इसके विपरीत जो लाड़न करते हैं वे विष पिला कर उनका जीवन नष्ट कर रहे हैं।

- सत्यार्थ प्रकाश: महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति
नि:शुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति लेने पर 20% की विशेष छूट
-: प्राप्ति स्थान :-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
फोन : 011-23360150, 09540040339 (श्री विजय आर्य)

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज की मिसकॉल सेवा आरम्भ 9211990990

अपने मोबाइल से मिस कॉल दें और पाए नि:शुल्क जानकारी
एस.एम.एस. से जानकारी चाहने वाले सज्जन इस नम्बर पर मिसकॉल करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार हेतु मिसकॉल सेवा आरम्भ की गई है। आप इस सेवा का लाभ उठाएं। यदि आप दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा आर्यसमाज से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की कोई **जानकारी-सूचना प्राप्त करना चाहते हो तो 09211990990 पर मिसकॉल करें।** आपके द्वारा कॉल करते ही कॉल कट जाएगी और आपको **धन्यवाद** संदेश प्राप्त होगा तथा आपका मो. नं. एस.एम.एस. सूची में अंकित हो जाएगा। **- *महामन्त्री***

प्रथम पृष्ठ का शेष

मिला। बच्चे व महिलाएं निर्धारित समय से काफी पहले समारोह स्थल पर मौजूद थे जिनकी योग के प्रति उत्सुकता देखते ही बनती थी। समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री राजीव आर्य, विद्यालय प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान श्री रविदेव गुप्ता, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र दुर्गा, एवं अन्य अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-
आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?
आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?
आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?
आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?
यदि हां!
तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।
- सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन: 23360150; 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : thearyasamaj.org से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह